RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-1
Issue-12
December-2016

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

विधवाओं के विरूद्ध हिंसा एवं शोषण के लिए उत्तरदायी कारणों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

Dr. Sudha Kumari

Working Teacher Subject of (Home Science) +2 Govt Teacher in Higher Secondary School at Noora Jila Parishad, Patna

ARTICLE DETAILS

Article History
Received: 20 November 2016
Accepted: 29 November 2016
Published Online: 05 December 2016

Keywords
वैधव्य, पुनर्विवाह, विमुख

ABSTRACT

नारी के लिए वैधव्य सबसे भयानक शब्द है। उसका सबसे बड़ा सौभाग्य सुहागिन बनना है। हिन्दुओं की उच्च जातियों में विधवा के पुनर्विवाह की परम्परा नहीं थी। विधवा से बड़े संयमी और तपस्वी जीवन की आशा की जाती थी। इस पर भी उसे अनष्टिकारी माना जाता था। उससे यह भी आशा की जाती थी कि वह यौन सम्बन्धी सभी बातों से विमुख रहेगी, जब परिवार के नजदीकी रिश्तेदार और समाज के भूखे भेड़िये उसकी अस्मत लूटने की चेष्टा करते हैं। यदि जाल में फँस गई तो सारा दोष उसी का है पुरूष तो उस लांछन से छूट ही जाता है। हिन्दू समाज ने शायद इसलिए सती प्रथा का आविष्कार कर लिया था कि विधवा अपने पति की लाश के साथ जिन्दा जला दी जाए ताकि न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसूरी। या फिर वृन्दावन और बनारस में विधवाओं को बाल मुंडवाकर रहने के लिए छोड़ दिया जाता था। आज भी ये हजारों की संख्या में सड़कों पर भिक्षा मांगती दिखाई देती है। अनेक वेश्यालयों तक भी विधवाएँ पहुंचाई जा चुकी है।

अध्ययन प्रविधि और तथ्यों का संग्रहन :

शोध–आलेख में अध्ययन विवरणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन से संबंधित तथ्यों का संकलन द्वितीयक श्रोतों से किया गया है। अनेक शोध–पत्र एवं पत्रिकाओं, शोध–आलेख एवं शोध–ग्रन्थों में संकलित सूचनाओं का गहन अवलोकन कर तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। समस्याओं से संबंधित सूचनाओं का संकलन प्राथमिक श्रोत पर आधारित है,। साक्षात्कार, अनुसूची और निदर्शन द्वारा अध्ययन समस्या से संबंधित वास्तविक तथ्यों को ज्ञात किया गया है। साक्षात्कार, अनुसूची द्वारा संग्रहित आंकड़ों को सरल तालिका द्वारा वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है। विभिन्न शोध ग्रंथ, पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त सूचनाएं द्वितीयक श्रोत की सहायक सामग्री हैं।

विश्लेषण :

राम अहुजा के अनुसार विधवाओं के प्रति हिंसा के प्रमुख लक्षण निम्नांकित हैं :–

(क) मध्य आयु की विधवाओं की तुलना में युवा विधवाओं का अधिक अपमान एवं शोषण होता है।

(ख) सामान्यतया विधवाओं को व्यापार, बैंक खातों, जीवन–बीमा पालिसियों आदि का बहुत कम ज्ञान होता है जिसके कारण वे पति पक्ष के सदस्यों के धोखे में आ जाती है जो उन्हें उनके मृत पतियों की सम्पत्ति नहीं देना चाहते।

(ग) विधवाओं पर हिंसा के बढ़ावा देनेवाले व्यक्ति पति पक्ष के ही सदस्य होते हैं।

(घ) शोषण के तीन प्रेरकों (शक्ति, सम्पत्ति व यौन शोषण) में मध्यम वर्ग की विधवाओं के प्रति हिंसा हेतु सम्पत्ति अधिक महत्वपूर्ण है; निम्न वर्ग में यौन शोषण अधिक महत्वपूर्ण है; जबकि शक्ति दोनो मध्यम और निम्न वर्ग की विधवाओं के प्रति हिंसा में अधिक महत्वपूर्ण है।

(ड़) यद्यपि सास का स्वेच्छाचारी व्यक्तित्व विधवाओं के शोषण के प्रमुख कारक हैं, तथापि विधवाओं की निष्क्रियता व बुजदिली उनके शोषण में अधिक महत्वपूर्ण हैं।

(च) आयु, शिक्षा तथा वर्ग विधवाओं के शोषण में महत्वपूर्ण रूप से सह–सम्बन्धित है परन्तु परिवार की रचना तथा आकार का इसमें कोई सह–सम्बन्ध नहीं है।

साक्षात्कार के क्रम में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से एक प्रश्न यह पूछा गया कि क्या आप जानते हैं कि विधवा विवाह के निषेध के कारण सती प्रथा का जन्म हुआ था? इस प्रथा का जो उत्तर उत्तरदात्रियों ने दिया है उसे निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

विधवा विवाह के निषेध के कारण सती–प्रथा का जन्म होने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	160	80
नहीं	40	20
योग	200	100

सारणी के आँकड़ों से स्पष्ट है कि 80 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने अर्थात कुल 160 उत्तरदात्रियों ने कहा कि विधवा विवाह के निषेध के कारण सती प्रथा का जन्म हुआ था

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

जबकि 20 प्रतिशत यानि कुल 40 उत्तरदात्रियों ने इस प्रश्न के संदर्भ में नकारात्मक उत्तर दिया ।

साक्षात्मकार के क्रम में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से यह भी पूछा गया कि क्या विधवा विवाह पर निषेध के कारण पारिवारिक संघर्ष पैदा हुए हैं और विधवाओं का पारिवारिक जीवन कष्टमय हो गया है तथा उसे अनेक प्रकार की यातनाएँ दी जाती है? उत्तरदात्रियों द्वारा दिये गऐ ऑकड़ों को निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

विधवा विवाह पर निषेध के फलस्वरूप पारिवारिक संघर्ष तथा विधवाओं का पारिवारिक जीवन कष्टमय होने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	120	60
नहीं	80	40
योग	200	100

सारणी के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 200 उत्तरदात्रियों में से 120 अर्थात 60 प्रतिशत ने उपरोक्त प्रश्न का उत्तर हॉ में तथा 40 प्रतिशत यानि कुल 80 उत्तरदात्रियों ने 'ना' में उत्तर दिया।

साक्षात्कार के क्रम में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से एक प्रश्न यह पूछा गया कि क्या आप जानते हैं कि संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करने के अभाव में कुछ विधवाऍ अनैतिक संबंध स्थापित कर लेती हैं? उत्तरदात्रियों द्वारा दिये गये उत्तरों को निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करनें के अभाव में कुछ विधवाओं द्वारा अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	112	56
नहीं	88	44
योग	200	100

सारणी के आँकड़ों से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 56 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने उपरोक्त प्रश्न का उत्तर हॉ में दिया है जबकि 200 में से कुल 88 उत्तरदात्रियों यानि 44 प्रतिशत का कहना था कि संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करने के अभाव में कुछ विधवाऍ अनैतिक संबंध स्थापित नहीं करती है।

साक्षात्कार के क्रम में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से यह पूछा गया कि साधारणतया विधवाओं को अपने पति के व्यापार, हिसाब–किताब, सर्टिफिकेटों, बीमें की पॉलिसियों इत्यादि के बारे में नगण्य के बराबर जानकारी होती है और वे अपने परिवार के बेईमान सदस्यों की धोखेबाजी के षड्यंत्रों की आसानी से शिकार हो जाती है? इस प्रश्न का जो उत्तर उत्तरदात्रियों ने दिया है उसे निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

विधवाओं को अपने पति के व्यापार, हिसाब–किताब, सर्टिफिकेटों, बीमे की पॉलिसियों और प्रतिभूतियों के बारे में नगण्य जानकारी होना तथा अपने परिवावर के बेईमान सदस्यों द्वारा धोखेबाजी के षड्यंत्रों का शिकार होने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	120	60
नहीं	80	40
योग	200	100

सारणी के आँकड़ों से स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने उपरोक्त प्रश्न का सकारात्मक तथा 40 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने नकारात्मक उत्तर दिया है।

साक्षात्कार के क्रम में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से एक प्रश्न यह पूछा गया था कि क्या विधवाओं के विरूद्ध हिंसा के अपराधकर्ता पति के परिवावर के सदस्य होते हैं। उत्तरदात्रियों द्वारा किये गये उत्तरों को निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

विधवाओं के विरूद्ध हिंसा के अपराधकर्ता, अधिकांशतया पति के परिवार के सदस्य होने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण–

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	174	87
नहीं	26	13
योग	200	100

उपरोक्त ऑकड़ों से यह स्पष्ट है कि इस संदर्भ में 174 उत्तरदात्रियों यानि 87 प्रतिशत ने हाँ में उत्तर दिया जबकि 13 प्रतिशत यानि 26 उत्तरदात्रियों ने विधवाओं के विरूद्ध हिंसा के लिए उपरोक्त तथ्यों को उत्तरदायी नहीं मानती हैं।

दुखी वैधव्य से मुक्ति पाने के लिए कई विधवाओं द्वारा आत्महत्या करने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	104	52
नहीं	96	48
योग	200	100

सारणी के ऑकड़ों से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 52 प्रतिशत अर्थात 104 उत्तरदात्रियों ने उपरोक्त प्रश्न का उत्तर हॉ में दिया जबकि 96 उत्तरदात्रियों यानि 48 प्रतिशत ने इस प्रश्न का ना में जबाव दिया।

साक्षात्कार के क्रम में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से एक प्रश्न यह भी पूछा गया था कि क्या काम–वासना के शिकार निम्न वर्ग की विधवाएँ अधिक होती

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

है? उत्तरदाताओं से प्राप्त ऑकड़ों को निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

कामवासना की शिकार निम्न वर्ग की विधवाओं को अधिक होने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण–

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	104	52.0
नहीं	96	48.0
योग	200	100

सारणी के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 52 प्रतिशत यानि 104 उत्तरदात्रियों ने उपरोक्त प्रश्न का जबाव हॉ में दिया जबकि 48.0 प्रतिशत यानि कुल 96 उत्तरदात्रियों ने 'नही' में जबाव दिया।

सम्पत्ति मध्यमवर्ग की विधवाओं के उत्पीड़न का निर्णायक कारक हाने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण।

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	104	52
नहीं	96	48
योग	200	100

सारणी के ऑकड़ों से स्पष्ट होता है कि 52 प्रतिशत उत्तरदात्रियों का कहना था कि सम्पत्ति मध्य वर्ग की विधवाओं के उत्पीड़न का निर्णायक कारक होती है जबकि 48 प्रतिशन यानि 96 उत्तरदात्रियों ने इस प्रश्न का नकारात्मक जबाव दिया।

साक्षात्कार के क्रम में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों से यह भी पूछा गया था कि क्या भरण–पोषण के अभाव में काम इच्छा की पूर्ति के लिए कई विधवाऍ वेश्यावृत्ति तक अपनाने के लिए विवश होती हैं? उत्तरदात्रियों द्वारा दिये गये ऑकड़ों को निम्न सारणी के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

भरण–पोषण के अभाव में काम इच्छा की पूर्ति के लिए कई विधवाओं द्वारा वेश्यावृत्ति के लिए विवश होने के प्रति उत्तरदात्रियों का दृष्टिकोण

दृष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
हाँ	140	70
नहीं	60	30
योग	200	100

ऑकड़ों से स्पष्ट है कि कुल 200 उत्तरदात्रियों में से 140 यानि 70 प्रतिशत ने भरण–पोषण के अभाव में कामइच्छा की पूर्ति के लिए कई विधवाओं द्वारा वेश्यावृत्ति के लिए विवश होने के प्रति 'हॉ' में उत्तर दिया जबकि 30 प्रतिशत यानि 60 उत्तरदात्रियों का इस प्रश्न के संदर्भ में नकारात्मक (ना) में जबाव था।

निष्कर्ष :

सामान्यतया विधवाओं को व्यापार, बैंक खातों, जीवन–बीमा पालिसियों आदि का बहुत कम ज्ञान होता है जिसके कारण वे पति पक्ष के सदस्यों के धोखे में आ जाती है जो उन्हें उनके मृत पतियों की सम्पत्ति नहीं देना चाहते। विधवाओं पर हिंसा को बढ़ावा देनेवाले व्यक्ति पति पक्ष के ही सदस्य होते हैं। शोषण के तीन प्रेरकों (शक्ति, सम्पत्ति व यौन शोषण) में मध्यम वर्ग की विधवाओं के प्रति हिंसा हेतु सम्पत्ति अधिक महत्वपूर्ण है। निम्न वर्ग में यौन शोषण अधिक महत्वपूर्ण है जबकि शक्ति दोनो मध्यम और निम्न वर्ग की विधवाओं के प्रति हिंसा में अधिक महत्वपूर्ण है।

ग्रंथ–संदर्भ :

1. *Billington, Marry Frances : Women in India : New Delhi, Amarko Book Agency, 1973.*
2. *Ahuja, Rani : Youth and crime, Rawat Publication, Jaipur, 1996.*
3. *Ahuja, Rani Sociological Criminology, New Age International Ltd. Publishers, New Delhi, 1996.*
4. *Agarwal S. N. : Age at marriage in India, Allahabad, Kitab Mahal, 1962.*
5. *Baig, Tara Ali : Women in India : Delhi, Govt. of India, Ministry of Information & Broadcasting, 1958.*
6. *Babel, August, 1975 : Women in Past, Present & Future, Calcutta : National Book Centre.*
7. *Bebarta, Prafulla C, : Attitudes of Women Towards Family Planning- A study in differences by family type in 6 villages of Delhi.*

© RRIJM 2015, All Rights Reserved